शब्द विचार

वर्णक सार्थक मेलकेँ शब्द कहल जाइत अछि । अर्थात् अर्थबोधक वर्णसमूह शब्द थिक । यथा- राम, कलम, पत्र आदि ।

शब्दक वर्गीकरण–

रूपान्तरक आधार पर शब्दक दू प्रकार अछि–

विकारी आ **अविकारी** शब्द ।

लिंग, वचन, कारक, काल तथा पुरुष आदिक कारणेँ जाहि शब्दक रूपमे परिवर्तन होइत अछि ओ **विकारी** शब्द कहबैछ ।

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण विकारी शब्द थिक ।

यथा- बालकसँ बालिका, छात्रसँ छात्रगण ।

अविकारी ओ शब्द थिक जकर रूप सदा एकहि समान रहय । अर्थात् लिंग, वचन, कारक आदिक कोनो प्रभाव एहन शब्द पर नहि पड़ैत अछि । मात्र अव्यय शब्द एहि कोटिमे अबैत अछि । उदाहरणक रूपमे यथा, तथा, जखन, तखन, आओर आदिकेँ लेल जा सकैछ ।

उद्‌गम अथवा **उत्पत्तिक** आधार पर शब्दक चारि भेद अछि–**तत्सम, तद्‌भव, देशज** आ **विदेशज** ।

1. **तत्सम**-संस्कृतक ओ शब्द जकर प्रयोग यथावत् मैथिली भाषामे प्रयोग होइत अछि, ओ तत्सम शब्द कहबैछ । यथा–अग्नि, अतिथि, सेवक, पुस्तक आदि ।
2. **तद्‌भव**-संस्कृतक ओ शब्द जकर रूप बदलिकेँ मैथिलीमे प्रयुक्त होइत अछि, ओ तद्‌भव कहबैछ । यथा–माए, आगि, पाथर, खेत, हाथी, आदि उपर्युक्त शब्द क्रमशः संस्कृतक माता, अग्नि, प्रस्तर, क्षेत्र, हस्तीसँ बनल अछि ।
3. **देशज**-मैथिली भाषाक अपन शब्दकेँ देशज कहल जाइत अछि । अर्थात् एहन शब्द ने तँ संस्कृतक बदलल रूप थिक आ ने तँ कोनो आन भाषासँ लेल गेल अछि । यथा- बताह, भुसकौल, बुड़िबक, बकलेल आदि ।

4. **विदेशज**-संस्कृतक अतिरिक्त विदेशी भाषाक शब्दक प्रयोग मैथिलीमे विदेशज कहबैत अछि। यथा-स्कूल, पुलिस, मोकदमा, तमाशा आदि।

मैथिली भाषा विकासशील अछि। आनो आनो भाषाक शब्दकेँ अपनामे समाहित करबाक गुण एहि जीवन्त भाषामे छैक। एहिसँ भाषा समृद्ध होइत अछि। वैश्वीकरणक एहि युगमे ई आवश्यक सेहो भऽ गेल अछि।

मैथिलीमे किछु एहन शब्द अछि जे तत्सम, तद्‌भव तथा विदेशज शब्दक मेलसँ बनल अछि अथवा दू विदेशज शब्दक मेलसँ बनल अछि। एहन शब्दकेँ **मिश्रित शब्द** कहल गेल अछि। ई दू प्रकारक अछि –

किछु शब्द मैथिली आ विदेशज शब्दक मेलसँ बनल अछि।

यथा- बेजोड़, चौकीदार, घड़ीसाज, घुड़सवार, लाठी-चार्ज, टिकट घर, रेलगाड़ी।

कतेक एहनो मिश्रित शब्द अछि जकर दुनू खण्ड विदेशी भाषा रहैत अछि।

यथा- फोटोसाज, नमकहराम, बेइमान, आतिशबाजी आदि।

व्युत्पत्ति अथवा **रचनाक** दृष्टिसँ शब्दक तीन प्रकार होइत अछि –

1. रूढ़ 2. यौगिक 3. योगरूढ़।

1. **रूढ़**-रूढ़ शब्द ओ थिक जकर खण्ड सार्थक नहि हो। अर्थात् एहन शब्दक खण्ड निरर्थक भऽ जाइत अछि।

   यथा-माता, पानि, घर आदि।

2. **यौगिक**-जकर खण्ड सार्थक हो से यौगिक शब्द कहबैत अछि।

   यथा-पाठशाला, पुस्तकालय आदि। एतय पाठक अर्थ पाठ्य विषय आ शालाक अर्थ घर भेल, तेँ एकरा यौगिक शब्द कहल गेल अछि।

3. **योगरूढ़**-जाहि शब्दक खण्ड अपन सामान्य अर्थकेँ छोड़ि विशेष अर्थ प्रकट करैत अछि ओ योगरूढ़ शब्द कहबैछ।

   यथा-लम्बोदर-लम्ब उदर तँ ककरो भऽ सकैत अछि, मुदा एहि शब्दसँ गणेशक बोध होइत अछि। तहिना पीताम्बर, नीलाम्बर आदि।

वाक्यमे **प्रयोगक विचारसँ** शब्दक पाँच भेद मानल गेल अछि-

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आ **अव्यय** ।

एहिमे संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आ विशेषण विकारी शब्द अछि आ अव्यय अविकारी शब्द अछि जकर चर्चा पहिने कयल गेल अछि ।

संज्ञा

कोनो व्यक्ति वस्तु अथवा स्थानक नामकेँ संज्ञा कहल जाइत अछि ।

यथा-राम, आम, पटना आदि ।

एकर पाँच भेद अछि–

1. **जातिवाचक**-जाहि संज्ञासँ जाति भरिक बोध हो, से जातिवाचक संज्ञा कहबैछ ।

   यथा-गाय, छात्र, मनुष्य आदि ।

2. **व्यक्तिवाचक**-जाहि संज्ञासँ कोनो खास वस्तु, व्यक्ति अथवा स्थानक बोध हो, से व्यक्तिवाचक संज्ञा कहबैछ ।

   यथा-दिल्ली, दशरथ, हिमालय, गंगा आदि ।

3. **समूहवाचक**-समूहवाचक संज्ञासँ व्यक्ति अथवा वस्तुक समूहक बोध होइछ ।

   यथा-मेला, सभा, गुच्छा, झुण्ड आदि ।

4. **द्रव्यवाचक**-जाहि वस्तुकेँ नापल-तौलल जाय से द्रव्यवाचक संज्ञा कहबैत अछि ।

   यथा-सोना, पानि, दूध, सुपारी, दालि आदि ।

5. **भाववाचक**-जाहि शब्दसँ गुण, स्वभाव, अवस्था आदिक बोध होइत अछि, ओ भाववाचक संज्ञा कहबैछ ।

   यथा-महत्ता, नेनपन, वीरता, देवत्व आदि ।

संज्ञाक रूपान्तर

जेना पूर्वहिमे उल्लेख कयल जा चुकल अछि जे संज्ञा विकारी शब्द थिक । संज्ञाक रूप लिंग, वचन ओ कारक चिह्न (परसर्ग)क कारणेँ परिवर्तित होइत अछि ।

लिंगक अनुरूप–

(क) छात्र अध्ययनरत छलाह ।

छात्रा अध्ययनरत छलीह ।

(ख) पण्डित वेदपाठ कऽ रहल छलाह ।

पण्डिताइन भानस कऽ रहल छलीह ।

उपर्युक्त दृष्टान्तमे 'छात्र' पुंलिंग अछि तथा 'छात्रा' स्त्रीलिंग । तहिना 'पंडित' पुंलिंग अछि तथा 'पंडिताइन' स्त्रीलिंग । दुनू उदाहरणसँ स्पष्ट अछि जे लिंगक आधार पर संज्ञा शब्दक रूपान्तर भेल अछि ।

वचनक अनुरूप–

(क) छात्र अध्ययनरत छथि ।

छात्रगण अध्ययनरत छथि ।

(ख) पण्डित वेदपाठ कऽ रहल छथि ।

पण्डित सभ वेदपाठ कऽ रहल छथि ।

उपर्युक्त उदाहरणमे 'छात्र' शब्द, एकक लेल प्रयुक्त भेल अछि मुदा 'छात्रगण' एकसँ बेसीक लेल । तहिना 'पंडित' एकक लेल तथा 'पण्डित सभ' एकसँ बेसीक लेल प्रयुक्त भेल अछि । एतय संज्ञाक रूपान्तरक आधार वचन थिक ।

कारक-चिह्नक अनुरूप–

(क) राम ई काज कऽ सकैत छथि ।

रामक द्वारा ई काज कराओल जा सकैत अछि ।

रामोसँ ई काज कराओल जा सकैत अछि ।

उपर्युक्त उदाहरणमे 'राम' एकवचन अछि तथा 'रामो' सेहो एकवचन अछि । मनहि 'रामो' शब्दक प्रयोग वाक्यकेँ जोरदार बनयबाक लेल कयल गेल अछि मुदा कारक चिह्नसँ संयुक्त भेने संज्ञाक रूपमे परिवर्तन तँ स्पष्ट अछिए ।

आब आगाँ विवेच्य कक्षाक पाठ्यक्रमक अनुरूप मात्र कारकक उल्लेख कयल जायत ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. संज्ञाक सोदाहरण परिभाषा लिखू ।
2. भाववाचक संज्ञा ककरा कही ?
3. संज्ञाक भेदक नाम लिखू ।
4. निम्नलिखित शब्दक संज्ञाक नामोल्लेख करू ।

   पत्र, विवाह, देवत्व, महानता, जल, चाउर, पटना, मेला, बेटा, देवी ।
5. निम्नलिखित शब्दसँ भाववाचक संज्ञा बनाउ ।

   मूर्ख, दृढ़, सुन्दर, गुरु, अपन ।

कारक

क्रियाक उत्पत्ति अथवा सम्पादनमे जे सहायक होइत अछि से कारक थिक ।

यथा-राम पत्र लिखैत छथि । एतय 'लिखब' क्रिया सम्पन्न होइत अछि राम आ पत्रक योगसँ । तेँ ई दुनू पद कारक भेल । कारकक आठ भेद अछि :- (1) कर्ता (2) कर्म (3) करण (4) सम्प्रदान (5) अपादान (6) सम्बन्ध (7) अधिकरण तथा (8) सम्बोधन ।

विशेष द्रष्टव्य– व्याकरण शास्त्रमे कारक छवे टा मानल गेल अछि । सम्बन्ध आ सम्बोधन कारक नहि थिक किएकतँ क्रियाक संग एकर कोनो साक्षात् सरोकार नहि अछि । हँ, सम्बन्धमे षष्ठी आं सम्बोधनमे प्रथमाक विधान विहित अछि । जेँ मैथिलीमे विभक्तिक लोपक प्रकृति अछि तेँ एतय कारक आठ मानि लेल गेल अछि ।

1. **कर्ता** कारक-वाक्यमे जे काज करैत अछि से कर्ता कहबैत अछि ।

   यथा-**राम** फल खा रहल अछि । एहिमे 'राम' कर्ता अछि । मैथिलीमे कर्ताक कोनो चिह्न नहि होइत अछि ।

2. **कर्म** कारक-काजक फल जकरा पर पड़य से भेल कर्म कारक ।

   यथा-सीता **पत्र** लिखि रहल छथि । एहि मे 'पत्र' कर्म अछि । एकर चिह 'काँ', 'केँ' अछि । यथा-हम रामकेँ जनैत छी ।

3. **करण** कारक-कर्ता जाहि साधनसँ कार्य सम्पादित करैत अछि ओ भेल करण कारक । अर्थात् करण कारक साधनक काज करैत अछि ।

   यथा-राम **कलमसँ** पत्र लिखि रहल छथि । एहिमे 'कलम' भेल करण कारक । एकर चिह्न अछि 'सँ', 'एँ' ।

4. **सम्प्रदान** कारक-कर्ता जकरा लेल अथवा जाहि उद्देश्यँ काज कऽ रहल अछि से भेल सम्प्रदान कारक ।

   यथा-राम **ज्ञानक लेल** पढ़ैत अछि । एहिमे 'ज्ञानक लेल' सम्प्रदान कारक अछि । एकर चिह्न अछि 'हेतु', 'लेल', 'केँ' ।

5. **अपादान** कारक-कर्ता जकरासँ फराक होइत अछि, से भेल अपादान कारक ।

यथा-सीता **घरसँ** स्कूल जाइत छथि । एहिमे 'घरसँ अपादान कारक थिक । एकर चिह्न 'सँ' अछि ।

6. **सम्बन्ध** कारक-कर्ताक जाहि व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थानसँ सम्बन्ध देखाओल जाइत अछि, से भेल सम्बन्ध कारक ।

यथा-**रामक** घर सुन्दर अछि । **अहाँ केर** घर कतय अछि ? उपर्युक्त वाक्यमे 'रामक' तथा 'अहाँ केर' शब्द सम्बन्धकारक अछि । एकर चिह्न 'क' 'केर' अछि ।

7. **अधिकरण** कारक-कर्ता जाहि स्थान पर काज करैत अछि से अधिकरण कारक कहबैछ ।

यथा-छात्र **स्कूलमे** पढ़ैत छथि । एहि मे 'स्कूल मे' अधिकरण कारक भेल । ई कारक कार्य सम्पन्न होयबामे आधारक काज करैत अछि । एकर चिह्न- 'मे', 'पर', 'हि', 'मध्य' अछि ।

8. **सम्बोधन** कारक-जखन कोनो काजक लेल व्यक्तिकेँ सम्बोधित कयल जाइत अछि तँ ओ सम्बोधन कारक कहबैछ ।

यथा-**औ राम** ! मोनसँ पढ़ू । एतय 'औ राम !' सम्बोधन कारक थिक । एकर चिह्न - 'औ', 'हौ', रौ', 'रे' आदि अछि ।

दान अर्थमे सम्प्रदान कारकक प्रयोग होइत अछि ।

यथा- राजा ब्राह्मणकेँ प्रचुर धन देलनि ।

भिखारि लेल अन्न दियौक ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. कारकक परिभाषा लिखू ।
2. कारकक भेदक नाम लिखू ।
3. एक एहन वाक्य बनाउ जाहिमे आठो कारकक प्रयोग भेल अछि ।
4. सीता गरीबकेँ धन देलनि । एहिमे कोन कारकक प्रयोग भेल अछि ।
5. निम्नलिखित वाक्यमे कारककेँ रेखांकित करू आ कारकक नाम लिखू ।

   (i) ओ पत्र लिखलनि । ....

   (ii) सीता घरमे अछि । ....

   (iii) ओ लोकनि गाम सँ अबैत छलाह ....

   (iv) छात्र सुखक लेल पढ़ैत छथि । ....

   (v) राजा जनक मिथिलाक राजा छलाह । ....

   (vi) ई काज हम अपनहि कऽ लेब । ....

सर्वनाम

संज्ञाक बदला आयल शब्दकेँ सर्वनाम कहल जाइत अछि । अर्थात् संज्ञाक प्रतिनिधि सर्वनाम कहबैछ । यथा–

राम एक छात्र छथि । ओ परिश्रमी छथि । एतय 'ओ' शब्द सर्वनाम थिक । किएक तँ ओ रामक बदलामे दोसर वाक्यमे आयल अछि ।

सर्वनामक प्रयोग वाक्यक रोचकताक लेल होइत अछि । बेर-बेर रामक प्रयोग भेलासँ वाक्यक सौन्दर्य नष्ट भऽ जायत । तेँ भाषाक सौन्दर्य-रक्षाक लेल सर्वनामक प्रयोग होइत अछि ।

सर्वनामक छओ भेद अछि–पुरुषवाचक, निजवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक आ सम्बन्धवाचक ।

1. **पुरुषवाचक** सर्वनाम–जाहि सर्वनामसँ पुरुष अर्थात् सम्भाषणक क्रममे वाचक, श्रोता किंवा जकरा विषयमे कहल जाय, ओकर बोध हो, से थिक पुरुषवाचक सर्वनाम ।

   यथा-हम, तोँ, ओ आदि ।

   एहि सर्वनामक तीन भेद अछि–

(क) **उत्तम पुरुष**- वक्ता उत्तम पुरुष सर्वनाम होइछ ।

यथा–हम पत्र लिखब । एतय 'हम' उत्तम पुरुष सर्वनाम अछि ।

(ख) **मध्यम पुरुष**- श्रोता मध्यम पुरुष कहबैछ ।

यथा–अपने कतय जाइत छी ? एतय 'अपने' मध्यमपुरुष भेल ।

(ग) **अन्य पुरुष**- जकरा विषयमे कहल जाय से अन्य पुरुष कहबैछ ।

यथा– हम तोरा लोकनिसँ रामक विषयमे कहैत छी ।
एतय 'राम' अन्यपुरुष सर्वनाम थिक ।
सभ संज्ञा अन्यपुरुष होइत अछि ।

2. **निजवाचक** सर्वनाम– जाहि सर्वनामसँ निज (अपन)क बोध हो, से निजवाचक सर्वनाम कहबैछ। ओ अपन कार्य अपनहि कयलनि। एतय 'अपनहि' निजवाचक सर्वनाम भेल।

3. **निश्चयवाचक** सर्वनाम-जाहि सर्वनामसँ निश्चितताक बोध होइत अछि, से निश्चयवाचक सर्वनाम कहबैछ।

   यथा- ई हमर पोथी थिक। एतय 'ई' निश्चयवाचक सर्वनाम थिक।

4. **अनिश्चयवाचक** सर्वनाम-जाहि सर्वनामसँ अनिश्चितताक बोध हो, से अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहबैछ।

   यथा-केओ एम्हरे आबि रहल अछि। जाइत काल किछु खा लेब। एतय 'केओ' एवं 'किछु' अनिश्चयवाचक सर्वनाम भेल।

5. **प्रश्नवाचक** सर्वनाम-जाहि सर्वनामसँ प्रश्नक बोध हो, से भेल प्रश्नवाचक सर्वनाम।

   यथा-के अबैत अछि ? एतय 'के' प्रश्नवाचक सर्वनाम भेल।

6. **सम्बन्धवाचक** सर्वनाम-जाहि सर्वनामसँ सम्बन्धक बोध होइत अछि, से भेल सम्बन्धवाचक सर्वनाम।

   यथा-जकर धन तकर नाम। एतय 'जकर' आ 'तकर' सम्बन्धवाचक सर्वनाम भेल।

सर्वनामक रूपावली

सर्वनामक रूपान्तर वचन, पुरुष आ कारकक अनुसार होइत अछि। संज्ञा जकाँ सर्वनामपर सेहो कारकक प्रभाव पड़ैत अछि, मुदा दुनूमे अन्तर अछि। जतय संज्ञामे सम्बोधन कारक होइत अछि, ओतय सर्वनाममे मात्र सात कारक होइत अछि। सम्बोधनक प्रयोग नहि होइत अछि।

सर्वनामक रूपावली निम्नलिखित अछि –

उत्तम पुरुष

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	हम	हम, हमरा सब, हमरा लोकनि
कर्म	हमरा, हमरे	हमरे सब, हमरे लोकनिके*

करण	हमरा द्वारा,	हमरासँ हमरे द्वारा, हमरे लोकनिसँ
सम्प्रदान	हमरा लेल	हमरे सब लेल, हमरे लोकनिक लेल
अपादान	हमरासँ	हमरे लोकनिसँ,
सम्बन्ध	हमर, हमरा, हमरे	हमरे सबहक, हमरे लोकनि केर
अधिकरण	हमरा पर, हमरेमे	हमरे सभ पर, हमरे लोकनिमे

मध्यम पुरुष

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता-	अपने	अपने सब, अपने लोकनि
कर्म-	अपनेकें*	अपने सबकें*, अपने लोकनिकें*
करण-	अपनेसँ	अपने सबसँ, अपने लोकनिकें*
सम्प्रदान-	अपनेक लेल	अपने सभ लेल, अपने लोकनि लेल
अपादान-	अपनेसँ	अपने सभ, अपने लोकनि लेल
सम्बन्ध-	अपने केर	अपने सभ आ अपने लोकनि केर
अधिकरण-	अपने पर, मे	अपने सभ आ अपने लोकनिक पर, मे

मध्यम पुरुषमे एहिना 'अहाँ' ओ 'तों*' क रूपावली चलैत अछि।

अन्य पुरुष

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता-	ओ	ओ सभ
कर्म-	ओकरा	ओकरा सभ
करण-	ओकरासँ	ओकरा सभसँ
सम्प्रदान-	ओकरा लेल	ओकरा सभ लेल
अपादान-	ओकरासँ	ओकरा सभसँ
सम्बन्ध-	ओकरा	ओकरा सभक
अधिकरण-	ओकरामे	ओकरा सभमे

एहिना अन्य सर्वनामक रूप देखओल जा सकैत अछि।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. सर्वनाम की थिक ? उदाहरण सहित स्पष्ट करू ।
2. पुरुषवाचक सर्वनामक भेदकेँ उदाहरण द्वारा स्पष्ट करू ।
3. निम्नलिखित प्रश्नक चारि-चारि उत्तर देल गेल अछि जाहिमे शुद्ध उत्तरक चयन करू ।

   (i) 'ओ ककर पोथी थिक' मे 'ओ' सर्वनाम अछि–

   (क) निजवाचक (ख) पुरुषवाचक (ग) प्रश्नवाचक (घ) सम्बन्धवाचक

   (ii) 'जकरे धन तकरे मान' मे 'जकरे' आ 'तकरे' सर्वनाम अछि-

   (क) अनिश्चवाचक (ख) सम्बन्धवाचक (ग) निजवाचक (घ) प्रश्नवाचक

   (iii) 'आइ ओ गाम गेलाह' मे 'ओ' थिक-

   (क) पुरुषवाचक (ख) निजवाचक (ग) संबंधवाचक (घ) प्रश्नवाचक

   (iv) 'अपने लोकनि कतय जाइत छी' मे 'अपने लोकनि' थिक

   (क) उत्तम पुरुष (ख) मध्यम पुरुष (ग) अन्य पुरुष (घ) निजवाचक

6. **हेतुहेतुमद्भूत**-जाहि भूतकालिक क्रियामे कार्य-कारणक संबंध रहैत अछि ओ हेतुहेतुमद्भूत काल कहबैत अछि ।
यथा-जँ ओ पढ़ितथि तँ परीक्षामे असफल नहि होइतथि ।

(ख) वर्तमान काल-जे समय बीति रहल अछि ओकरा वर्तमान काल कहल जाइत अछि। यथा-छात्र पुस्तक पढ़ैत छथि ।

वर्तमान कालक तीन भेद अछि –

(1) सामान्य वर्तमान (2) तात्कालिक वर्तमान आ (3) संदिग्ध वर्तमान ।

1. **सामान्य वर्तमान काल**-जे काज वर्तमान कालमे सम्पन्न होइत अछि, से सामान्य वर्तमान कहबैछ ।
यथा-राम पत्र लिखैत अछि ।

2. **तात्कालिक वर्तमान** -जे काज वर्तमान कालमे भऽ रहल अछि, से तात्कालिक वर्तमान कहबैछ ।
यथा-राम पत्र लिखि रहल अछि ।

3. **संदिग्ध वर्तमान**-वर्तमान कालमे जे काज होयबामे संदेह हो, से संदिग्ध वर्तमान कहबैछ ।
यथा-राम पत्र लिखैत होयताह ।

(ग) भविष्यत् काल-जे काज आगू होयत, से भविष्यत् काल कहबैत अछि ।
यथा-राम घर जयताह ।

एकर दू मुख्य भेद अछि–

1. **सामान्य भविष्यत्**-जे काज आबयवला समयमे सामान्य रूपेँ होयत से सामान्य भविष्यत् कहबैछ ।
यथा-राम घर जयताह ।

2. **सम्भाव्य भविष्यत्**-जाहि काजक भविष्यत् कालमे होयबाक सम्भावना अछि, से सम्भाव्य भविष्यत् अछि ।
यथा-राम पत्र पढ़ैत रहय ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. कालक परिभाषा लिखू ।
2. कालक विभिन्न भेदक सोदाहरण परिभाषा लिखू ।
3. भूतकालक भेदक नाम लिखू ।
4. वर्तमान कालक भेदक नाम लिखू ।
5. निम्नलिखित वाक्य भूतकालक कोन भेद अछि ?

   (क) सीता पत्र लिखने अछि ।

   (ख) राम पत्र लिखने होयताह ।

   (ग) ओ लोकनि घर गेल छलाह ।

   (घ) ओ पत्र लिखलनि ।

   (ङ) हम गाम गेल छलहुँ ।

वाच्य

वाच्य क्रियाक ओ रूप थिक जाहिमे कर्ता, कर्म अथवा भावमे सँ वाक्यमे ककर प्रधानता अछि, पता लगैत अछि ।

वाक्यमे कखनो क्रिया कर्ताक अनुसार, कखनो कर्मक अनुसार ओ कखनो भावक अनुसार होइत अछि । वाच्य द्वारा एहि बातक पता लगैत अछि ।

वाच्य तीन प्रकारक होइत अछि–

1. **कर्तृवाच्य**-जाहि वाक्यमे क्रियाक लिंग, वचन आ पुरुष कर्ताक अनुसार होइत अछि, से कर्तृवाच्य भेल ।

   यथा-राम पत्र लिखैत छलाह । सीता पत्र लिखैत छलीह । ओ लोकनि घर जाइत छलाह ।

   एहि वाक्यमे अकर्मक आ सकर्मक दुनू क्रियाक प्रयोग होइत अछि ।

2. **कर्मवाच्य**-जाहि वाक्यमे क्रियाक लिंग, वचन आ पुरुष कर्मक अनुसार होइत अछि, से कर्मवाच्य कहबैछ ।

   यथा-रामक द्वारा सीता देखल गेलीह । सीताक द्वारा राम देखल गेलाह ।

   एतय प्रथम वाक्यमे कर्म 'सीता' स्त्रीलिंग तँ क्रिया सेहो स्त्रीलिंग आ दोसरमे पुँलिंग तँ क्रिया सेहो पुँलिंग भेल अछि ।

   कर्म वाच्यक क्रिया सदा सकर्मक होइत अछि ।

3. **भाववाच्य**-जाहि वाक्यक क्रिया ने तँ कर्ताक अनुसार ने तँ कर्मक अनुसार चलैत अछि, अपितु भावक अनुसार अर्थात् एक वचन, पुँलिंग आ अन्य पुरुष होइत अछि से भाववाच्य कहबैत अछि ।

   यथा- रामक द्वारा दौगल नहि जाइत अछि ।
   सीताक द्वारा खायल नहि जाइत छैक ।
   ओकरा द्वारा हँसल गेल ।
   रामसँ हँसा गेल ।

   उपर्युक्त चारू वाक्यमे क्रिया एकवचन, पुँलिंग आ अन्य पुरुष अछि ।

   एहि वाच्यमे सदा अकर्मक क्रियाक प्रयोग होइत अछि ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वाच्यक परिभाषा लिखू ।
2. कर्तृवाच्य ककरा कहैत छी ?
3. भाववाच्यसँ अहाँ की बुझैत छी ?
4. निम्नलिखित कोन वाच्यक उदाहरण थिक ?

   (क) सीता द्वारा हँसल जाइत अछि ।

   (ख) हुनका द्वारा पत्र लिखल गेल ।

   (ग) छात्रक द्वारा छात्रा देखल गेलीह ।

   (घ) मोहन द्वारा ई काज कयल गेल ।

   (ङ) हमरा द्वारा पुस्तक पढ़ल गेल ।

अव्यय

जाहि शब्दक रूपमे लिंग, वचन, कारक ओ पुरुष आदिक कारणेँ कोनो परिवर्तन नहि होइत अछि, ओकरा अव्यय कहल जाइत अछि ।

यथा-आओर, किन्तु, परन्तु, यद्यपि, जखन, आदि । अव्यय शब्दक रूपमे कोनो विकार उत्पन्न नहि होइत अछि ।

अव्ययक चारि भेद अछि-

(1) क्रियाविशेषण (2) समुच्चय बोधक (3) विस्मयादि बोधक तथा (4) सम्बन्ध बोधक ।

1. **क्रियाविशेषण** -जे अव्यय क्रियाक विशेषताक बोध करबैत अछि से क्रिया विशेषण अव्यय कहबैछ ।

   यथा-राम **शीघ्र** ओतय गेलाह । 'शीघ्र' क्रियाविशेषण अव्यय अछि ।

क्रियाविशेषण अव्यय चारि प्रकारक अछि--

(क) स्थानवाचक (ख) कालवाचक (ग) परिमाणवाचक (घ) भाववाचक ।

क. स्थानवाचक-जाहि क्रियाविशेषणसँ स्थानक बोध होइत अछि तकरा स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहल जाइत अछि ।

यथा-**एहिठाम** बाढ़ि आयल अछि । एतय 'एहिठाम' स्थानवाचक अव्ययक प्रयोग भेल अछि ।

ख. कालवाचक-जाहि अव्ययसँ कोनो कालक बोध होइत अछि, से कालवाचक अव्यय कहबैत अछि ।

यथा-ओ **आइ** अयलाह । सीता **सदिखन** पढ़ैत रहैत अछि ।

ग. परिमाण वाचक-जाहि अव्ययसँ मात्राक बोध होइत अछि ।

यथा-**बहुत** धन छनि । **यथाशक्ति** सहयोग करू । **किछु** अन्न गरीबमे अवश्य बाँटू ।

घ. भाववाचक-भाववाचक अव्ययसँ रीति, प्रकार, भाव आदिक बोध होइत अछि ।

यथा-छात्र आइकाल्हि **एना** किएक करैत छथि । सीता **सहसा** उपस्थित भेलीह । ओ अकस्मात् दु:खित पड़ि गेलाह ।

2. **समुच्चयबोधक**-जे अव्यय दू शब्द, दू वाक्य अथवा वाक्यांशकेँ जोड़ैत अछि, ओ समुच्चयबोधक अव्यय कहबैत अछि ।
यथा-सीता अत्यधिक परिश्रम करैत अछि; **मुदा** कहियो नीक नहि कयलीह । एतय 'मुदा' समुच्चयबोधक अव्यय अछि ।

3. **विस्मयादिबोधक** -जाहि अव्ययसँ शोक, घृणा, हर्ष, विस्मय आदि प्रकट होइत अछि, तकरा विस्मयादिबोधक अव्यय कहल जाइछ ।
यथा-धन्य, अहा, हाय, बाप रे बाप, छीया-छीया, दुरछी आदि ।

4. **सम्बन्धबोधक**-जे अव्यय वाक्यमे संज्ञाक संबंध अन्यसँ जोड़ैत अछि ओ सम्बन्ध बोधक कहबैछ । यथा-आगू, पाछू, बाहर, बीच, लगभग आदि अपने हमरा लेल ईश्वर **सदृश** छी । एतय सदृश सम्बन्धबोधक अव्यय थिक ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. अव्ययक सोदाहरण परिभाषा लिखू ।
2. स्थानवाचक अव्ययक उदाहरण लिखू ।
3. निम्नलिखित वाक्यमे अव्ययकेँ रेखाँकित करू ।

   (क) सीता दु:खित अछि मुदा काज करैत अछि ।

   (ख) छात्र अकस्मात् आयल ।

   (ग) सीता आओर राम तेज अछि ।

   (घ) शिक्षक अयलाह आ शीघ्रहि चल गेलाह ।

   (ङ) धनक बिना मान नहि होइत अछि ।